|| श्री ललिता सहस्र नाम स्तोत्रम् ||

न्यासः| अस्य श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रमाला मन्त्रस्य | वशिन्यादिवाग्देवता ऋषयः |
अनुष्टुप् छन्दः | श्रीललितापरमेश्वरी देवता | श्रीमद्वाग्भवकूटेति बीजम् | मध्यकूटेति शक्तिः |
शक्तिकूटेति कीलकम् | श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी- प्रसादसिद्धिद्वारा
चिन्तितफलावाप्त्यर्थे जपे विनियोगः |

||ध्यानम् ||

सिन्दूरारुण विग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलि स्फुरत्तारा नायक शेखरां स्मितमुखी मापीन वक्षोरुहाम् |
पाणिभ्यामलिपूर्ण रत्न चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतींसौम्यां रत्न घटस्थ रक्तचरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम् ||

||अथ श्री ललिता सहस्रनाम स्तोत्रम् ||

ॐ श्रीमाता श्रीमहाराज्ञी श्रीमत्- सिंहासनेश्वरी | चिदग्नि- कुण्ड- सम्भूता देवकार्य- समुद्यता ||१||
उद्यद्भानु- सहस्राभा चतुर्बाहु- समन्विता | रागस्वरूप- पाशाढ्या क्रोधाकाराङ्कुशोज्ज्वला ||२||
मनोरूपेक्षु- कोदण्डा पञ्चतन्मात्र- सायका | निजारुण- प्रभापूर- मज्जद्ब्रह्माण्ड- मण्डला ||३||
चम्पकाशोक- पुन्नाग- सौगन्धिक- लसत्कचा | कुरुविन्दमणि- श्रेणी- कनत्कोटीर- मण्डिता ||४||
अष्टमीचन्द्र- विभ्राज- दलिकस्थल- शोभिता | मुखचन्द्र- कलङ्काभ- मृगनाभि- विशेषका ||५||
वदनस्मर- माङ्गल्य- गृहतोरण- चिल्लिका | वक्त्रलक्ष्मी- परीवाह- चलन्मीनाभ- लोचना ||६||
नवचम्पक- पुष्पाभ- नासादण्ड- विराजिता | ताराकान्ति- तिरस्कारि- नासाभरण- भासुरा ||७||
कदम्बमञ्जरी- क्लृप्त- कर्णपूर- मनोहरा | ताटङ्क- युगली- भूत- तपनोडुप- मण्डला ||८||
पद्मराग- शिलादर्श- परिभावि- कपोलभूः | नवविद्रुम- बिम्बश्री- न्यक्कारि- रदनच्छदा ||९||
शुद्ध- विद्याङ्कुराकार- द्विजपङ्क्ति- द्वयोज्ज्वला | कर्पूर- वीटिकामोद- समाकर्षि- दिगन्तरा ||१०||
निज- सल्लाप- माधुर्य- विनिर्भर्त्सित- कच्छपी | मन्दस्मित- प्रभापूर- मज्जत्कामेश- मानसा ||११||
अनाकलित- सादृश्य- चिबुकश्री- विराजिता | कामेश- बद्ध- माङ्गल्य- सूत्र- शोभित- कन्धरा ||१२||
कनकाङ्गद- केयूर- कमनीय- भुजान्विता | रत्नग्रैवेय- चिन्ताक- लोल- मुक्ता- फलान्विता ||१३||
कामेश्वर- प्रेमरत्न- मणि- प्रतिपण- स्तनी | नाभ्यालवाल- रोमालि- लता- फल- कुचद्वयी ||१४||
लक्ष्यरोम- लताधारता- समुन्नेय- मध्यमा | स्तनभार- दलन्मध्य- पट्टबन्ध- वलित्रया ||१५||
अरुणारुण- कौसुम्भ- वस्त्र- भास्वत्- कटीतटी | रत्न- किङ्किणिका- रम्य- रशना- दाम- भूषिता ||१६||
कामेश- ज्ञात- सौभाग्य- मार्दवोरु- द्वयान्विता | माणिक्य- मुकुटाकार- जानुद्वय- विराजिता ||१७||
इन्द्रगोप- परिक्षिप्त- स्मरतूणाभ- जङ्घिका | गूढगुल्फा कूर्मपृष्ठ- जयिष्णु- प्रपदान्विता ||१८||
नख- दीधिति- संछन्न- नमज्जन- तमोगुणा | पदद्वय- प्रभाजाल- पराकृत- सरोरुहा ||१९||
सिञ्जान- मणिमञ्जीर- मण्डित- श्री- पदाम्बुजा | मराली- मन्दगमना महालावण्य- शेवधिः ||२०||

सर्वारुणाऽनवद्याङ्गी सर्वाभरण- भूषिता | शिव- कामेश्वराङ्कस्था शिवा स्वाधीन- वल्लभा ||२१||
सुमेरु- मध्य- शृङ्गस्था श्रीमन्नगर- नायिका | चिन्तामणि- गृहान्तस्था पञ्च- ब्रह्मासन- स्थिता ||२२||
महापद्माटवी- संस्था कदम्बवन- वासिनी | सुधासागर- मध्यस्था कामाक्षी कामदायिनी ||२३||
देवर्षि- गण- संघात- स्तूयमानात्म- वैभवा | भण्डासुर- वधोद्युक्त- शक्तिसेना- समन्विता ||२४||
सम्पत्करी- समारूढ- सिन्धुर- व्रज- सेविता | अश्वारूढाधिष्ठिताश्व- कोटि- कोटिभिरावृता ||२५||
चक्रराज- रथारूढ- सर्वायुध- परिष्कृता | गेयचक्र- रथारूढ- मन्त्रिणी- परिसेविता ||२६||
किरिचक्र- रथारूढ- दण्डनाथा- पुरस्कृता | ज्वाला- मालिनिकाक्षिप्त- वह्निप्राकार- मध्यगा ||२७||
भण्डसैन्य- वधोद्युक्त- शक्ति- विक्रम- हर्षिता | नित्या- पराक्रमाटोप- निरीक्षण- समुत्सुका ||२८||
भण्डपुत्र- वधोद्युक्त- बाला- विक्रम- नन्दिता | मन्त्रिण्यम्बा- विरचित- विषङ्ग- वध- तोषिता ||२९||
विशुक्र- प्राणहरण- वाराही- वीर्य- नन्दिता | कामेश्वर- मुखालोक- कल्पित- श्रीगणेश्वरा ||३०||
महागणेश- निर्भिन्न- विघ्नयन्त्र- प्रहर्षिता | भण्डासुरेन्द्र- निर्मुक्त- शस्त्र- प्रत्यस्त्र- वर्षिणी ||३१||
कराङ्गुलि- नखोत्पन्न- नारायण- दशाकृतिः | महा- पाशुपतास्त्राग्नि- निर्दग्धासुर- सैनिका ||३२||
कामेश्वरास्त्र- निर्दग्ध- सभण्डासुर- शून्यका | ब्रह्मोपेन्द्र- महेन्द्रादि- देव- संस्तुत- वैभवा ||३३||
हर- नेत्राग्नि- संदग्ध- काम- सञ्जीवनौषधिः | श्रीमद्वाग्भव- कूटैक- स्वरूप- मुख- पङ्कजा ||३४||
कण्ठाधः- कटि- पर्यन्त- मध्यकूट- स्वरूपिणी | शक्ति- कूटैकतापन्न- कट्यधोभाग- धारिणी ||३५||
मूल- मन्त्रात्मिका मूलकूटत्रय- कलेबरा | कुलामृतैक- रसिका कुलसंकेत- पालिनी ||३६||
कुलाङ्गना कुलान्तस्था कौलिनी कुलयोगिनी | अकुला समयान्तस्था समयाचार- तत्परा ||३७||
मूलाधारैक- निलया ब्रह्मग्रन्थि- विभेदिनी | मणि- पूरान्तरुदिता विष्णुग्रन्थि- विभेदिनी ||३८||
आज्ञा- चक्रान्तरालस्था रुद्रग्रन्थि- विभेदिनी | सहस्राराम्बुजारूढा सुधा- साराभिवर्षिणी ||३९||
तडिल्लता- समरुचिः षट्चक्रोपरि- संस्थिता | महाशक्तिः कुण्डलिनी बिसतन्तु- तनीयसी ||४०||
भवानी भावनागम्या भवारण्य- कुठारिका | भद्रप्रिया भद्रमूर्तिर् भक्त- सौभाग्यदायिनी ||४१||
भक्तिप्रिया भक्तिगम्या भक्तिवश्या भयापहा | शाम्भवी शारदाराध्या शर्वाणी शर्मदायिनी ||४२||
शाङ्करी श्रीकरी साध्वी शरच्चन्द्र- निभानना | शातोदरी शान्तिमती निराधारा निरञ्जना ||४३||
निर्लेपा निर्मला नित्या निराकारा निराकुला | निर्गुणा निष्कला शान्ता निष्कामा निरुपप्लवा ||४४||
नित्यमुक्ता निर्विकारा निष्प्रपञ्चा निराश्रया | नित्यशुद्धा नित्यबुद्धा निरवद्या निरन्तरा ||४५||
निष्कारणा निष्कलङ्का निरुपाधिर् निरीश्वरा | नीरागा रागमथनी निर्मदा मदनाशिनी ||४६||
निश्चिन्ता निरहंकारा निर्मोहा मोहनाशिनी | निर्ममा ममताहन्त्री निष्पापा पापनाशिनी ||४७||
निष्क्रोधा क्रोधशमनी निर्लोभा लोभनाशिनी | निःसंशया संशयघ्नी निर्भवा भवनाशिनी ||४८||
निर्विकल्पा निराबाधा निर्भेदा भेदनाशिनी | निर्नाशा मृत्युमथनी निष्क्रिया निष्परिग्रहा ||४९||
निस्तुला नीलचिकुरा निरपाया निरत्यया | दुर्लभा दुर्गमा दुर्गा दुःखहन्त्री सुखप्रदा ||५०||
दुष्टदूरा दुराचार- शमनी दोषवर्जिता | सर्वज्ञा सान्द्रकरुणा समानाधिक- वर्जिता ||५१||
सर्वशक्तिमयी सर्व- मङ्गला सद्गतिप्रदा | सर्वेश्वरी सर्वमयी सर्वमन्त्र- स्वरूपिणी ||५२||

सर्व- यन्त्रात्मिका सर्व- तन्त्ररूपा मनोन्मनी | माहेश्वरी महादेवी महालक्ष्मीर् मृडप्रिया ||५३||
महारूपा महापूज्या महापातक- नाशिनी | महामाया महासत्त्वा महाशक्तिर् महारतिः ||५४||
महाभोगा महैश्वर्या महावीर्या महाबला | महाबुद्धिर् महासिद्धिर् महायोगेश्वरेश्वरी ||५५||
महातन्त्रा महामन्त्रा महायन्त्रा महासना | महायाग- क्रमाराध्या महाभैरव- पूजिता ||५६||
महेश्वर- महाकल्प- महाताण्डव- साक्षिणी | महाकामेश- महिषी महात्रिपुर- सुन्दरी ||५७||
चतुःषष्ट्युपचाराढ्या चतुःषष्टिकलामयी | महाचतुः- षष्टिकोटि- योगिनी- गणसेविता ||५८||
मनुविद्या चन्द्रविद्या चन्द्रमण्डल- मध्यगा | चारुरूपा चारुहासा चारुचन्द्र- कलाधरा ||५९||
चराचर- जगन्नाथा चक्रराज- निकेतना | पार्वती पद्मनयना पद्मराग- समप्रभा ||६०||
पञ्च- प्रेतासनासीना पञ्चब्रह्म- स्वरूपिणी | चिन्मयी परमानन्दा विज्ञान- घनरूपिणी ||६१||
ध्यान- ध्यातृ- ध्येयरूपा धर्माधर्म- विवर्जिता | विश्वरूपा जागरिणी स्वपन्ती तैजसात्मिका ||६२||
सुप्ता प्राज्ञात्मिका तुर्या सर्वावस्था- विवर्जिता | सृष्टिकर्त्री ब्रह्मरूपा गोप्त्री गोविन्दरूपिणी ||६३||
संहारिणी रुद्ररूपा तिरोधान- करीश्वरी | सदाशिवाऽनुग्रहदा पञ्चकृत्य- परायणा ||६४||
भानुमण्डल- मध्यस्था भैरवी भगमालिनी | पद्मासना भगवती पद्मनाभ- सहोदरी ||६५||
उन्मेष- निमिषोत्पन्न- विपन्न- भुवनावली | सहस्र- शीर्षवदना सहस्राक्षी सहस्रपात् ||६६||
आब्रह्म- कीट- जननी वर्णाश्रम- विधायिनी | निजाज्ञारूप- निगमा पुण्यापुण्य- फलप्रदा ||६७||
श्रुति- सीमन्त- सिन्दूरी- कृत- पादाब्ज- धूलिका | सकलागम- सन्दोह- शुक्ति- सम्पुट- मौक्तिका ||६८||
पुरुषार्थप्रदा पूर्णा भोगिनी भुवनेश्वरी | अम्बिकाऽनादि- निधना हरिब्रह्मेन्द्र- सेविता ||६९||
नारायणी नादरूपा नामरूप- विवर्जिता | ह्रींकारी ह्रीमती हृद्या हेयोपादेय- वर्जिता ||७०||
राजराजार्चिता राज्ञी रम्या राजीवलोचना | रञ्जनी रमणी रस्या रणत्किङ्किणि- मेखला ||७१||
रमा राकेन्दुवदना रतिरूपा रतिप्रिया | रक्षाकरी राक्षसघ्नी रामा रमणलम्पटा ||७२||
काम्या कामकलारूपा कदम्ब- कुसुम- प्रिया | कल्याणी जगतीकन्दा करुणा- रस- सागरा ||७३||
कलावती कलालापा कान्ता कादम्बरीप्रिया | वरदा वामनयना वारुणी- मद- विह्वला ||७४||
विश्वाधिका वेदवेद्या विन्ध्याचल- निवासिनी | विधात्री वेदजननी विष्णुमाया विलासिनी ||७५||
क्षेत्रस्वरूपा क्षेत्रेशी क्षेत्र- क्षेत्रज्ञ- पालिनी | क्षयवृद्धि- विनिर्मुक्ता क्षेत्रपाल- समर्चिता ||७६||
विजया विमला वन्द्या वन्दारु- जन- वत्सला | वाग्वादिनी वामकेशी वह्निमण्डल- वासिनी ||७७||
भक्तिमत्- कल्पलतिका पशुपाश- विमोचिनी | संहृताशेष- पाषण्डा सदाचार- प्रवर्तिका ||७८||
तापत्रयाग्नि- सन्तप्त- समाह्लादन- चन्द्रिका | तरुणी तापसाराध्या तनुमध्या तमोऽपहा ||७९||
चितिस्तत्पद- लक्ष्यार्था चिदेकरस- रूपिणी | स्वात्मानन्द- लवीभूत- ब्रह्माद्यानन्द- सन्ततिः ||८०||
परा प्रत्यक्चितीरूपा पश्यन्ती परदेवता | मध्यमा वैखरीरूपा भक्त- मानस- हंसिका ||८१||
कामेश्वर- प्राणनाडी कृतज्ञा कामपूजिता | शृङ्गार- रस- सम्पूर्णा जया जालन्धर- स्थिता ||८२||
ओड्याणपीठ- निलया बिन्दु- मण्डलवासिनी | रहोयाग- क्रमाराध्या रहस्तर्पण- तर्पिता ||८३||
सद्यःप्रसादिनी विश्व- साक्षिणी साक्षिवर्जिता | षडङ्गदेवता- युक्ता षाड्गुण्य- परिपूरिता ||८४||

नित्यक्लिन्ना निरुपमा निर्वाण- सुख- दायिनी | नित्या- षोडशिका- रूपा श्रीकण्ठार्ध- शरीरिणी ||८५||
प्रभावती प्रभारूपा प्रसिद्धा परमेश्वरी | मूलप्रकृतिर् अव्यक्ता व्यक्ताव्यक्त- स्वरूपिणी ||८६||
व्यापिनी विविधाकारा विद्याविद्या- स्वरूपिणी | महाकामेश- नयन- कुमुदाह्लाद- कौमुदी ||८७||
भक्त- हार्द- तमोभेद- भानुमद्भानु- सन्ततिः | शिवदूती शिवाराध्या शिवमूर्तिः शिवङ्करी ||८८||
शिवप्रिया शिवपरा शिष्टेष्टा शिष्टपूजिता | अप्रमेया स्वप्रकाशा मनोवाचामगोचरा ||८९||
चिच्छक्तिश् चेतनारूपा जडशक्तिर् जडात्मिका | गायत्री व्याहृतिः सन्ध्या द्विजबृन्द- निषेविता ||९०||
तत्त्वासना तत्त्वमयी पञ्च- कोशान्तर- स्थिता | निःसीम- महिमा नित्य- यौवना मदशालिनी ||९१||
मदघूर्णित- रक्ताक्षी मदपाटल- गण्डभूः | चन्दन- द्रव- दिग्धाङ्गी चाम्पेय- कुसुम- प्रिया ||९२||
कुशला कोमलाकारा कुरुकुल्ला कुलेश्वरी | कुलकुण्डालया कौल- मार्ग- तत्पर- सेविता ||९३||
कुमार- गणनाथाम्बा तुष्टिः पुष्टिर् मतिर् धृतिः | शान्तिः स्वस्तिमती कान्तिर् नन्दिनी विघ्ननाशिनी ||९४||
तेजोवती त्रिनयना लोलाक्षी- कामरूपिणी | मालिनी हंसिनी माता मलयाचल- वासिनी ||९५||
सुमुखी नलिनी सुभ्रूः शोभना सुरनायिका | कालकण्ठी कान्तिमती क्षोभिणी सूक्ष्मरूपिणी ||९६||
वज्रेश्वरी वामदेवी वयोऽवस्था- विवर्जिता | सिद्धेश्वरी सिद्धविद्या सिद्धमाता यशस्विनी ||९७||
विशुद्धिचक्र- निलयाऽऽरक्तवर्णा त्रिलोचना | खट्वाङ्गादि- प्रहरणा वदनैक- समन्विता ||९८||
पायसान्नप्रिया त्वक्स्था पशुलोक- भयङ्करी | अमृतादि- महाशक्ति- संवृता डाकिनीश्वरी ||९९||
अनाहताब्ज- निलया श्यामाभा वदनद्वया | दंष्ट्रोज्ज्वलाऽक्ष- मालादि- धरा रुधिरसंस्थिता ||१००||
कालरात्र्यादि- शक्त्यौघ- वृता स्निग्धौदनप्रिया | महावीरेन्द्र- वरदा राकिण्यम्बा- स्वरूपिणी ||१०१||
मणिपूराब्ज- निलया वदनत्रय- संयुता | वज्रादिकायुधोपेता डामर्यादिभिरावृता ||१०२||
रक्तवर्णा मांसनिष्ठा गुडान्न- प्रीत- मानसा | समस्तभक्त- सुखदा लाकिन्यम्बा- स्वरूपिणी ||१०३||
स्वाधिष्ठानाम्बुज- गता चतुर्वक्त्र- मनोहरा | शूलाद्यायुध- सम्पन्ना पीतवर्णाऽतिगर्विता ||१०४||
मेदोनिष्ठा मधुप्रीता बन्धिन्यादि- समन्विता | दध्यन्नासक्त- हृदया काकिनी- रूप- धारिणी ||१०५||
मूलाधाराम्बुजारूढा पञ्च- वक्त्राऽस्थि- संस्थिता | अङ्कुशादि- प्रहरणा वरदादि- निषेविता ||१०६||
मुद्गौदनासक्त- चित्ता साकिन्यम्बा- स्वरूपिणी | आज्ञा- चक्राब्ज- निलया शुक्लवर्णा षडानना ||१०७||
मज्जासंस्था हंसवती- मुख्य- शक्ति- समन्विता | हरिद्रान्नैक- रसिका हाकिनी- रूप- धारिणी ||१०८||
सहस्रदल- पद्मस्था सर्व- वर्णोप- शोभिता | सर्वायुधधरा शुक्ल- संस्थिता सर्वतोमुखी ||१०९||
सर्वौदन- प्रीतचित्ता याकिन्यम्बा- स्वरूपिणी | स्वाहा स्वधाऽमतिर् मेधा श्रुतिः स्मृतिर् अनुत्तमा ||११०||
पुण्यकीर्तिः पुण्यलभ्या पुण्यश्रवण- कीर्तना | पुलोमजार्चिता बन्ध- मोचनी बन्धुरालका ||१११||
विमर्शरूपिणी विद्या वियदादि- जगत्प्रसूः | सर्वव्याधि- प्रशमनी सर्वमृत्यु- निवारिणी ||११२||
अग्रगण्याऽचिन्त्यरूपा कलिकल्मष- नाशिनी | कात्यायनी कालहन्त्री कमलाक्ष- निषेविता ||११३||
ताम्बूल- पूरित- मुखी दाडिमी- कुसुम- प्रभा | मृगाक्षी मोहिनी मुख्या मृडानी मित्ररूपिणी ||११४||
नित्यतृप्ता भक्तनिधिर् नियन्त्री निखिलेश्वरी | मैत्र्यादि- वासनालभ्या महाप्रलय- साक्षिणी ||११५||
परा शक्तिः परा निष्ठा प्रज्ञानघन- रूपिणी | माध्वीपानालसा मत्ता मातृका- वर्ण- रूपिणी ||११६||

महाकैलास- निलया मृणाल- मृदु- दोर्लता | महनीया दयामूर्तिर् महासाम्राज्य- शालिनी ||११७||
आत्मविद्या महाविद्या श्रीविद्या कामसेविता | श्री- षोडशाक्षरी- विद्या त्रिकूटा कामकोटिका ||११८||
कटाक्ष- किङ्करी- भूत- कमला- कोटि- सेविता | शिरःस्थिता चन्द्रनिभा भालस्थेन्द्र- धनुःप्रभा ||११९||
हृदयस्था रविप्रख्या त्रिकोणान्तर- दीपिका | दाक्षायणी दैत्यहन्त्री दक्षयज्ञ- विनाशिनी ||१२०||
दरान्दोलित- दीर्घाक्षी दर- हासोज्ज्वलन्- मुखी | गुरुमूर्तिर् गुणनिधिर् गोमाता गुहजन्मभूः ||१२१||
देवेशी दण्डनीतिस्था दहराकाश- रूपिणी | प्रतिपन्मुख्य- राकान्त- तिथि- मण्डल- पूजिता ||१२२||
कलात्मिका कलानाथा काव्यालाप- विनोदिनी | सचामर- रमा- वाणी- सव्य- दक्षिण- सेविता ||१२३||
आदिशक्तिर् अमेयाऽऽत्मा परमा पावनाकृतिः | अनेककोटि- ब्रह्माण्ड- जननी दिव्यविग्रहा ||१२४||
क्लींकारी केवला गुह्या कैवल्य- पददायिनी | त्रिपुरा त्रिजगद्वन्द्या त्रिमूर्तिस् त्रिदशेश्वरी ||१२५||
त्र्यक्षरी दिव्य- गन्धाढ्या सिन्दूर- तिलकाञ्चिता | उमा शैलेन्द्रतनया गौरी गन्धर्व- सेविता ||१२६||
विश्वगर्भा स्वर्णगर्भा वरदा वागधीश्वरी | ध्यानगम्याऽपरिच्छेद्या ज्ञानदा ज्ञानविग्रहा ||१२७||
सर्ववेदान्त- संवेद्या सत्यानन्द- स्वरूपिणी | लोपामुद्रार्चिता लीला- क्लृप्त- ब्रह्माण्ड- मण्डला ||१२८||
अदृश्या दृश्यरहिता विज्ञात्री वेद्यवर्जिता | योगिनी योगदा योग्या योगानन्दा युगन्धरा ||१२९||
इच्छाशक्ति- ज्ञानशक्ति- क्रियाशक्ति- स्वरूपिणी | सर्वाधारा सुप्रतिष्ठा सदसद्रूप- धारिणी ||१३०||
अष्टमूर्तिर् अजाजैत्री लोकयात्रा- विधायिनी | एकाकिनी भूमरूपा निर्द्वैता द्वैतवर्जिता ||१३१||
अन्नदा वसुदा वृद्धा ब्रह्मात्मैक्य- स्वरूपिणी | बृहती ब्राह्मणी ब्राह्मी ब्रह्मानन्दा बलिप्रिया ||१३२||
भाषारूपा बृहत्सेना भावाभाव- विवर्जिता | सुखाराध्या शुभकरी शोभना सुलभा गतिः ||१३३||
राज- राजेश्वरी राज्य- दायिनी राज्य- वल्लभा | राजत्कृपा राजपीठ- निवेशित- निजाश्रिता ||१३४||
राज्यलक्ष्मीः कोशनाथा चतुरङ्ग- बलेश्वरी | साम्राज्य- दायिनी सत्यसन्धा सागरमेखला ||१३५||
दीक्षिता दैत्यशमनी सर्वलोक- वशङ्करी | सर्वार्थदात्री सावित्री सच्चिदानन्द- रूपिणी ||१३६||
देश- कालापरिच्छिन्ना सर्वगा सर्वमोहिनी | सरस्वती शास्त्रमयी गुहाम्बा गुह्यरूपिणी ||१३७||
सर्वोपाधि- विनिर्मुक्ता सदाशिव- पतिव्रता | सम्प्रदायेश्वरी साध्वी गुरुमण्डल- रूपिणी ||१३८||
कुलोत्तीर्णा भगाराध्या माया मधुमती मही | गणाम्बा गुह्यकाराध्या कोमलाङ्गी गुरुप्रिया ||१३९||
स्वतन्त्रा सर्वतन्त्रेशी दक्षिणामूर्ति- रूपिणी | सनकादि- समाराध्या शिवज्ञान- प्रदायिनी ||१४०||
चित्कलाऽऽनन्द- कलिका प्रेमरूपा प्रियङ्करी | नामपारायण- प्रीता नन्दिविद्या नटेश्वरी ||१४१||
मिथ्या- जगदधिष्ठाना मुक्तिदा मुक्तिरूपिणी | लास्यप्रिया लयकरी लज्जा रम्भादिवन्दिता ||१४२||
भवदाव- सुधावृष्टिः पापारण्य- दवानला | दौर्भाग्य- तूलवातूला जराध्वान्त- रविप्रभा ||१४३||
भाग्याब्धि- चन्द्रिका भक्त- चित्तकेकि- घनाघना | रोगपर्वत- दम्भोलिर् मृत्युदारु- कुठारिका ||१४४||
महेश्वरी महाकाली महाग्रासा महाशना | अपर्णा चण्डिका चण्डमुण्डासुर- निषूदिनी ||१४५||
क्षराक्षरात्मिका सर्व- लोकेशी विश्वधारिणी | त्रिवर्गदात्री सुभगा त्र्यम्बका त्रिगुणात्मिका ||१४६||
स्वर्गापवर्गदा शुद्धा जपापुष्प- निभाकृतिः | ओजोवती द्युतिधरा यज्ञरूपा प्रियव्रता ||१४७||
दुराराध्या दुराधर्षा पाटली- कुसुम- प्रिया | महती मेरुनिलया मन्दार- कुसुम- प्रिया ||१४८||

वीराराध्या विराड्रूपा विरजा विश्वतोमुखी | प्रत्यग्रूपा पराकाशा प्राणदा प्राणरूपिणी ||१४९||
मार्ताण्ड- भैरवाराध्या मन्त्रिणीन्यस्त- राज्यधूः | त्रिपुरेशी जयत्सेना निस्त्रैगुण्या परापरा ||१५०||
सत्य- ज्ञानानन्द- रूपा सामरस्य- परायणा | कपर्दिनी कलामाला कामधुक् कामरूपिणी ||१५१||
कलानिधिः काव्यकला रसज्ञा रसशेवधिः | पुष्टा पुरातना पूज्या पुष्करा पुष्करेक्षणा ||१५२||
परंज्योतिः परंधाम परमाणुः परात्परा | पाशहस्ता पाशहन्त्री परमन्त्र- विभेदिनी ||१५३||
मूर्ताऽमूर्ताऽनित्यतृप्ता मुनिमानस- हंसिका | सत्यव्रता सत्यरूपा सर्वान्तर्यामिनी सती ||१५४||
ब्रह्माणी ब्रह्मजननी बहु रूपा बुधार्चिता | प्रसवित्री प्रचण्डाऽऽज्ञा प्रतिष्ठा प्रकटाकृतिः ||१५५||
प्राणेश्वरी प्राणदात्री पञ्चाशत्पीठ- रूपिणी | विशृङ्खला विविक्तस्था वीरमाता वियत्प्रसूः ||१५६||
मुकुन्दा मुक्तिनिलया मूलविग्रह- रूपिणी | भावज्ञा भवरोगघ्नी भवचक्र- प्रवर्तिनी ||१५७||
छन्दःसारा शास्त्रसारा मन्त्रसारा तलोदरी | उदारकीर्तिर् उद्दामवैभवा वर्णरूपिणी ||१५८||
जन्ममृत्यु- जरातप्त- जनविश्रान्ति- दायिनी | सर्वोपनिष- दुद्- घुष्टा शान्त्यतीत- कलात्मिका ||१५९||
गम्भीरा गगनान्तस्था गर्विता गानलोलुपा | कल्पना- रहिता काष्ठाऽकान्ता कान्तार्ध- विग्रहा ||१६०||
कार्यकारण- निर्मुक्ता कामकेलि- तरङ्गिता | कनत्कनकता- टङ्का लीला- विग्रह- धारिणी ||१६१||
अजा क्षयविनिर्मुक्ता मुग्धा क्षिप्र- प्रसादिनी | अन्तर्मुख- समाराध्या बहिर्मुख- सुदुर्लभा ||१६२||
त्रयी त्रिवर्गनिलया त्रिस्था त्रिपुरमालिनी | निरामया निरालम्बा स्वात्मारामा सुधासृतिः ||१६३||
संसारपङ्क- निर्मग्न- समुद्धरण- पण्डिता | यज्ञप्रिया यज्ञकर्त्री यजमान- स्वरूपिणी ||१६४||
धर्माधारा धनाध्यक्षा धनधान्य- विवर्धिनी | विप्रप्रिया विप्ररूपा विश्वभ्रमण- कारिणी ||१६५||
विश्वग्रासा विद्रुमाभा वैष्णवी विष्णुरूपिणी | अयोनिर् योनिनिलया कूटस्था कुलरूपिणी ||१६६||
वीरगोष्ठीप्रिया वीरा नैष्कर्म्या नादरूपिणी | विज्ञानकलना कल्या विदग्धा बैन्दवासना ||१६७||
तत्त्वाधिका तत्त्वमयी तत्त्वमर्थ- स्वरूपिणी | सामगानप्रिया सौम्या सदाशिव- कुटुम्बिनी ||१६८||
सव्यापसव्य- मार्गस्था सर्वापद्विनिवारिणी | स्वस्था स्वभावमधुरा धीरा धीरसमर्चिता ||१६९||
चैतन्यार्घ्य- समाराध्या चैतन्य- कुसुमप्रिया | सदोदिता सदातुष्टा तरुणादित्य- पाटला ||१७०||
दक्षिणा- दक्षिणाराध्या दरस्मेर- मुखाम्बुजा | कौलिनी- केवलाऽनर्घ्य- कैवल्य- पददायिनी ||१७१||
स्तोत्रप्रिया स्तुतिमती श्रुति- संस्तुत- वैभवा | मनस्विनी मानवती महेशी मङ्गलाकृतिः ||१७२||
विश्वमाता जगद्धात्री विशालाक्षी विरागिणी | प्रगल्भा परमोदारा परामोदा मनोमयी ||१७३||
व्योमकेशी विमानस्था वज्रिणी वामकेश्वरी | पञ्चयज्ञ- प्रिया पञ्च- प्रेत- मञ्चाधिशायिनी ||१७४||
पञ्चमी पञ्चभूतेशी पञ्च- संख्योपचारिणी | शाश्वती शाश्वतैश्वर्या शर्मदा शम्भुमोहिनी ||१७५||
धरा धरसुता धन्या धर्मिणी धर्मवर्धिनी | लोकातीता गुणातीता सर्वातीता शमात्मिका ||१७६||
बन्धूक- कुसुमप्रख्या बाला लीलाविनोदिनी | सुमङ्गली सुखकरी सुवेषाढ्या सुवासिनी ||१७७||
सुवासिन्यर्चन- प्रीताऽऽशोभना शुद्धमानसा | बिन्दु- तर्पण- सन्तुष्टा पूर्वजा त्रिपुराम्बिका ||१७८||
दशमुद्रा- समाराध्या त्रिपुराश्री- वशङ्करी | ज्ञानमुद्रा ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेय- स्वरूपिणी ||१७९||
योनिमुद्रा त्रिखण्डेशी त्रिगुणाम्बा त्रिकोणगा | अनघाऽद्भुत- चारित्रा वाञ्छितार्थ- प्रदायिनी ||१८०||

अभ्यासातिशय- ज्ञाता षडध्वातीत- रूपिणी | अव्याज- करुणा- मूर्तिर् अज्ञान- ध्वान्त- दीपिका ||१८१||
आबाल- गोप- विदिता सर्वानुल्लङ्घ्य- शासना | श्रीचक्रराज- निलया श्रीमत्- त्रिपुरसुन्दरी ||१८२||
श्रीशिवा शिव- शक्त्यैक्य- रूपिणी ललिताम्बिका | एवं श्रीललिता देव्या नाम् नां साहस्रकं जगुः |

|| इति श्री ब्रह्माण्ड पुराणे उत्तरखण्डे श्री हयग्रीवागस्त्यसंवादे श्रीललिता सहस्रनाम स्तोत्र सम्पूर्णम् ||

सिन्दूरारुण विग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलि स्फुरत्तारा नायक शेखरां स्मितमुखी मापीन वक्षोरुहाम् |
पाणिभ्यामलिपूर्ण रत्न चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतींसौम्यां रत्न घटस्थ रक्तचरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम् ||